हास्य व्यंग्य

होली मधुमेही की.....

शकील ख़ान

जब भी कोई त्यौहार आता है,मधुमेही को सबसे ज्यादा फिकर हो जाती है कि मैं वो त्यौहार की मिठाई कैसे खा पाऊँगा? उसके ऊपर उसी तरह की घर वाले सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर देते हैं, जैसे आजकल हमारे मुल्क में त्यौहारों के आते ही पुलिस कि सुरक्षा व्यवस्था पूरे मुल्क में बढ़ा दी जाती है। फिर पुलिस जैसे दावा करती है कि एक परिन्दा भी पर नहीं मार सकता वैसे ही मधुमेही की माँ हो या बीवी या पति हो या बाप सब यही कहते हैं कि अगर तुमने बद परहेजी करी तो हमसे बुरा कोई नहीं होगा। फिर मधुमेही जुगाड़ बनाता है कि घर में रखी गुजियाँ कैसे निपटाऊँ और जो गुलाब जामुन हर बार फ्रिज खोलने से आँखों में दिखते हैं, कैसे खा पाऊँ। कोई न कोई बहाने ढूँढ़ने लगता है और ये घर के दरोगा गिन–गिन के गुजियाँ, गिन–गिन के गुलाब जामुन रखते हैं। जैसे कोई सरकारी ऑफिस में स्टोर कीपर अपना काम करता है। फर्क इतना है, वो 10 रूपयें में बिक जाते हैं और ये बिकते नहीं।

अब एक हमारे दोस्त हैं शर्मा जी! वो 10 साल से मधुमेही हैं, लेकिन चोरी छुपे खूब मीठा खाते हैं, और त्यौहारों में इतने शरीफ बन जाते हैं कि पूछो मत। चार दिन पहले से सख्त परहेज करना शुरू कर देते हैं क्योंकि उन्हें मालूम हैं कि त्यौहार के अगले दिन घर के दरोगा लोग उनकी जाँच करायेंगे। डॉक्टर के पास भेजेंगे शुगर टेस्ट करवायेंगे। इसलिये शर्मा जी तो बेचारे कोई रिस्क नहीं लेना चाहते वर्ना पूरे साल घर वालों के ताने सुनने पड़ेंगे। बीवी तो जैसे मौका ताड़ के बैठी रहती है कि इनको तो अपनी चटोरी ज़बान पे कन्ट्रोल ही नहीं है। जरा सा मीठा देखा नहीं कि लार टपकाने लगते हैं। ये नहीं मालूम कि ये इनके लिये ज़हर है। अभी शुगर टेस्ट करवाई थी तो 410 निकली थी और इनसे बोलो तो कहते हैं वो मशीन खराब थी, ये कम्पनी वाले जान बूझकर ऐसी मशीन बनाते हैं जिसमें शुगर बढ़ी हुई आती है। ताकि पेशेंट बार–बार टेस्ट करे और उनकी खूब स्ट्रिप बिके। इसी में तो कमाते हैं साले, वरना डॉक्टर को विदेश यात्रा कैसे करायेंगे। सब बकवास है।

अब बताईये शर्मा जी बेचारे अपनी बढ़ी हुई शुगर को कम करने के लिये कम्पनी पर ही बरस

पड़ते हैं। लेकिन मीठा खाना छोड़ नहीं सकते। बस बहाने ढूँढते रहते है। इसलिये शर्मा जी आज कल चार दिन पहले से परहेज में लगे हुए हैं। फिर शर्मा जी ने होली के दिन अपनी गोली एक से दो कर कहा जब शुगर कम होगी तो जो फ्रिज में रखी गुलाब जामुन बीवी खुद अपने हाथों से खिलायेगी, मनायेगी। मैं भी शुरू में मना करूँगा बाद में दो कि जगह चार खा जाऊँगा, जब अचानक शर्मा जी की शुगर होने लगी कम, बीवी ने कहा गुलाब जामुन खालो ठीक हो जायेगी। शर्मा जी ने सोचा अगर अभी खाऊँगा तो एक ही मिलेगा थोड़ा रूकुँगा तो चार मिलेगा और शर्मा जी थोड़ा रूक गये। थोड़ा रूकना क्या था उनकी हालत हो गई खराब। पहुँच गये कोमा में एक भी नसीब न हुआ। सब भगे डॉक्टर के पास। डॉक्टर ने ग्लुकोस लगाया और मेहनत करके पिलाया उससे शर्मा जी को कुछ होश आया। शर्मा जी ने डॉक्टर को सब बताया। डॉक्टर ने शर्मा जी को हड़काया फिर प्यार से समझाया।

बेचारे मधुमेही अब क्या करें उनको कुछ समझ में नहीं आता के वो अब त्यौहार कि मिठाई कैसे खायें? फिर वो कभी अपने आप को कौसते हैं। कभी अपनी बीमारी को, कि ये साली मुझे ही क्यों हो गई, अब इस बार की होली में परिहार साहब ने तो सोच ही लिया कि चाहे कुछ भी हो जाये में खूब मीठा खाऊँगा, भले ही हास्पिटल जाना पड़े। क्योंकि होली में अगर मीठी ठंडाई न पी तो फिर क्या किया। बस जुगाड़ में लग गये कि दो गिलास ठंडाई, चार गुजिये, दो गुलाब जामुन बस इस बार का टार्गेट है। अब लगे परिहार साहब अपना टार्गेट पूरा करने में। बड़ी जुगाड़–तुगाड़ करके दो गिलास ठंडाई, एक गुलाब जामुन और गुजिये पूरे चार की जुगाड़ कर ली। फिर होली का माहौल था, थोड़ी शराब कि छूट बीवी ने दे दी थी।

ये सब होने के बाद तो परिहार साहब मस्त हो गये और खूब मजे करने लगे। लेकिन शाम तक थोड़ा कमजोर पड़ने लगे, पैरों में दर्द होने लगा, दस–बारह बार पेशाब घर के चक्कर लग गये। अब सब से छुपाते फिर रहे हैं कि क्या हुआ। लेकिन मिसेस परिहार पहले से तैयार थीं लेकर हथियार चढ़ बैठीं परिहार साहब के ऊपर और लगी चिल्लाने। और खाओं मीठा कहा था ऐसा–वैसा कुछ मत खाना अपनी होली मनाने के चक्कर में हमारी होली कर दी पोली। बस चलो डॉक्टर के पास। जब किया डॉक्टर ने चैक तो वही मशीन पर आया 480 नम्बर। बस! अब परिहार साहब कि आवाज़ बन्द हो गई। मन गई उनकी होली और उनके घर वालों की।

डॉक्टर ने समझाया–

''भैया अब तो बड़े बन जाईये।
और अपनी अकल लगाईये।।''
ये अन्दर की बात है कि–
''जो मीठा जाता है अन्दर।
वो दिखता है मशीन पर।।''
''अगर जज्बा है कुछ करने का।
तो मीठा है बन्द करने का।।''

डॉक्टर की सलाह मानिये मीठा खाना छोड़िये। ''परिहार साहब ने मन में ठाना अब नहीं, चलेगा बहाना।'' ***जब सरकार गीली होली से सूखी होली खेलने को कह सकती है, तो हम मधुमेही मीठी होली से फीकी होली क्यों नहीं मना सकते,*** इसलिये परिहार साहब ने प्रण किया और नारा दिया ''त्यौहार हो या शादी मीठा है हमारी बर्बादी'' अब हम हो जायें इस बात पे राज़ी के बिना मीठे में है हमारी आजादी।

●●●